कुष्ठ-रोग (कोढ़ बीमारी) से सुरक्षा के उपाय

(छत्तीसगढ़ी रूपांतरण)

(जोएल अलमेड़ा, एम.बी.बी.एस., पी.एच.डी.)

छत्तीसगढ़ राज्य मा कुष्ठ रोग ल कोढ़ बीमारी यने छूत की बीमारी के नाम से जाने जाथे। ये बीमारी ला छूत के बीमारी मान के मनखे मन कोढ़ से पीड़ित मनखे से प्यार-दया अऊ सेवा या सहयोग करे के बजाए घृनापूर्ण दुर्व्यवहार करथे। ये बीमारी से पीड़ित मनखे के जीवन नरख बन जाथे। हमर प्रदेश के शासकीय स्वास्थ्य केंद्र मा कुष्ठ-रोग/ कोढ़ बीमारी के इलाज संभव हावय। हमर छत्तीसगढ़ शासन ह ये रोग ल दूर करे बर मन मा ठान ले हे। ये बीमारी कीटाणु से होवत हावय। ऐ रोग से बचे बर थोर कन जरूरी बात ला समझे बर पड़ही।

हमर भारत देश म ऐ बीमारी हा इतका कन बगरे हावय कि हर मिनट म इकझन नवा व्यक्ति कोढ़ बीमारी के शिकार होवत हावय।

हमन ला ये रोग के विकलांगता होय की पहिली पहचानना अब्बड़ जरूरी हावय। कुष्ठ-रोग ह हमर देश म नई पाए जाथे, ऐ सोचना गलत हावय, अऊ ऐ ह हमर मन के स्वास्थ्य बर हानिकारक हावय। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के वर्ष २०१३ के रिपोर्ट बताथे कि ऐ रोग ल तबे उन्मूलित माने जाही, जब ऐ बीमारी/ रोग के एकोठिन नवा रोगी झन मिलय।

अवईया दस बरस मा हमर देश मा दस लाख मनखे मन ला कुष्ठ के रोग हो जाही। हमन ला अऊ हमर हर एक संगवारी ल ऐ सोचे बर पड़ही कि हमर घर के आस-पास २५ ठन बड़े-बड़े बिल्डिंग म रहईया करीब १००० मनखे मन गुजर-बसर करथे। अतके कन लोग के बीच मा दस बरस मा एक नवा कुष्ठ-रोग के रोगी के होना अवईया दस-अक-साल म कुष्ठ रोग के महामारी पइदा करे बर काफी हे। कुष्ठ-रोग के लक्षण महामारी के चिन्हारी बस हे। अवईया १० बरस मा बिना कोनों लक्षण के २ करोड़ से १० करोड़ रोगी हा ऐ रोग का शिकार हो जाही। कुष्ठ रोग के कीटाणु ह छईहाँ मा सूख जाथे, अऊ ५ महीना तक जिंदा रथे, अऊ इही कीटाणु पाँच महीना तक हमर शरीर के भीतर प्रवेश करके रोग फैलाए बर शुरू कर सकथे।

अबड़ ग़रीबी से मुक्ति के कारण से चीन के शिंडोंग प्रांत मा ५० बरस पहिले अऊ नॉर्वे मा १०० बरस पहिले कुष्ठ रोग ह हर साल १०% के गति ला कम होत जात रहिस, पर हमर देश मा ऐकर स्थिति ह एकदम उल्टा हावय। ईहाँ नवा रोगी जेखर विकृतियाँ देखे म मिलथे, तेखर प्रमाण हा बरस २००८-०९ से २०१३-१४ मा बढ़ीस हावय। एकर से हमन ला सीख मिलथे कि देश खुद कतको अमीर होए के बाद भी ऐ गरीबी ला शहर अऊ गाँव से हटाय बिना रोग-मुक्त होय बर सोच नई सकन।

बिना इलाज के ये कुष्ठ-रोग मरीज के स्नायु (नस) ला नष्ट कर देथे, अऊ दर्द के अनुभव ला ख़त्म कर देथे। एखर बर हमर शरीर के अंग हर बार-बार चोट खाथे अव विकृत हो जाथे। ऐ रोग ह हमर हाथ-गोंड के ऊँगुली अऊ आँख के अनुभूति ल ख़तम करके ओला विकृत तको कर देथे। नष्ट होय स्नायु (नसों) के सेती हमर चेहरा अव हाथ-पैर के माँस-पेशियाँ के हाल लकवा कस हो जाथे। ऐकर से हमर हाथ-पैर के ऊँगुली मन ला चलाए बर सहायता लेय बर पड़थे। अऊ आँखी के पलक मन ला भी बंद करे बर बहुतेच दिक्कत होथे। कुष्ठ-रोग के निदान बर अनुभूति खतम होय के पहिली एकर इलाज करां अब्बड़ जरूरी हावय।

जब कोनो प्रकार के चमड़ी में दाग-धब्बा जेमा पेन या पतला काड़ी के नोक के स्पर्श से पता नई चलय अऊ कान के नीचे के हिस्सा ह मोटा फूले कस लागथे, अऊ हाथ-पैर म बिना दर्द के चोट बार-बार होथे, ऊँगुली ला सीधा करे बर मुश्किल होवय, त तुरंत अपन नजदीक के सरकारी अस्पताल मा जाकर जाँच करवाव, जिहाँ कुष्ठ-रोग के जाँच अऊ उपचार निःशुल्क (फोकट मा) देय जाथे। एकर उपचार बर बहु दवा-युक्त इलाज (मल्टी-ड्रग थेरपी) भी देय जाथे। कुष्ठ-रोग के मरीज के अलावा घर-परिवार के सबोझन के ऐकर जाँच व उपचार जरूरी हावय। कुछ दिनो मा ऐ दवा मन के सेवन से संक्रामक कुष्ठ-रोग हर असंक्रामक हो जाथे, लेकिन अपन मनके नष्ट होए हुए स्नायु (नस) मन ला सुधार नई होवे।

बहुदवाई वाले इलाज दवाई के सेवन ले दो साल के चलते स्नायु (नसों) के अबड़ पतन होथे अऊ हमर शरीर म सूजन हो जाथे, जेला हमन हा न्यूराईटिस कईथन। बहु-दवाई द्वारा इलाज अऊ कीटाणुओं के अंदरूनी युद्ध ह स्नायु (नसों) ल हमेशा खराब कर देथे। अऊ हमर शरीर के स्नायु ला गंभीर नुकसान पहुँचाथे। न्यूराईटिस के लक्षण दिखे म समय लगथे, कई बार परिस्थिति गंभीर होय के पहिली हम एला समझ नई सकन। अनुभवी स्वास्थ्य कार्यकर्ता के, बहु-दवाई इलाज के शुरू होय के निरंतर दो साल के

होवत ले स्नायु ला ध्यान में रखे बर अऊ जाँच करे बर, जरूरत हावय। ऐसने कुशल अऊ सजग कार्यकर्ता पहिली मिलत रहिस, लेकिन कुष्ठ-रोग उन्मूलन के जल्दबाजी म घोषणा के सेती अब के समय मा कुष्ठ कार्यकर्ता अऊ कुष्ठ सेवा केंद्रों के अभाव हावय। अनुभवी कुष्ठ-रोग कार्यकर्ता ह स्नायु के सूजन अऊ न्यूराईटिस मन ला पहचाने म विशेषज्ञ होथे, जिकर से स्नायु सूजन ला रोके बर दवा ह सही समय म शुरू करके, हमर स्नायु के रक्षा अऊ अंगों के विकृति मन ला रोक सकथे।

कुष्ठ-रोग के कार्यक्रम ह स्नायु के स्थिति अऊ समय म जाँच के सुविधा देके हमन ला कुष्ठ रोग के दौरान स्नायु के विकृति अऊ रोगी मन ला शारीरिक विकृति से बचा सकथे।

शरीर म विकृति होय के बावजूद कुष्ठ-रोग के इलाज प्राप्त मरीज ह ऐ रोग ल नई फैलावय। सिर्फ़ ऐ बात हावय कि ओकर स्नायु मा कुष्ठ-रोग के कीटाणु पहिली से रहिस जे हर अब खतम होगे हावय। इही जानके कुष्ठ-रोगी ल सम्मान अऊ प्रेम दे सकथन, जैसना कि हमन आने संगवारी ल देथन।

ऐ बात ला झन भूलव कि कुष्ठ-रोग के मरीज हमन हो सकत रहेन, अऊ हमर शरीर म ऐ रोग के विकृति उत्पन्न हो सकत रिहिसे। कुष्ठ रोगी के शारीरिक विकृति बर हमन हा पुनर्निर्माण सर्जरी, पुनर्वासन अऊ समर्थन कुष्ठ-रोग कार्यक्रम के तहत संगवारी मन ल दे सकथन। आप मन ह ऐ रोग से पीड़ित हावव त ऐ सेवा मन ल लेवे के पूरा प्रयास करव।

<u>हमन का कर सकथन</u> : हमन ह अपन प्रियजन ल कुष्ठ-रोग से बचाए बर अभियान चला सकथन, अऊ अपन लोकसभा, विधानसभा के सदस्य, पंचायत अऊ नगर-निगम के अधिकारी मन ल पत्र लिख सकथन जेमा हमन ह कुष्ठ रोग कार्यक्रम के समर्थन, अऊ कुष्ठ रोग के बेहतर इलाज, अऊ स्नायु के भारी नुकसान ल कुष्ठ-उन्मूलन कार्यक्रम से रोक सकथन। अऊ ऐ बात बता सकथन कि-

1. कुष्ठ-रोग ह अभी समाप्त नई हुए हावय, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)- २०१३ की परिभाषा हर बताथे कि हमर देश के १० लाख से ज्यादा मनखे मन ला कुष्ठ-रोग हो जाही अऊ राजनीतिक मन के परिवार, अऊ जम्मों संगवारी मन सबला ऐकर से खतरा हावय, जेकर बर हमन ला कुष्ठ-

रोग चिकित्सा कार्यक्रमों के समर्थन करे बर अबड़ जरूरी हो जाथे, इही मा सबो-झन के हित हावय।

2. राष्ट्रीय कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम डाहर ले प्रशिक्षित स्वास्थ्य कार्यकर्ता उपलब्ध कराए जावय, अऊ कुष्ठ-रोगी मन ल जेला बहु-दवाई युक्त इलाज देय जाथे, तेला हर महीना म स्नायु के जाँच बेरा-बेरा दू-साल तक कराना जरूरी हावय। ऐसना नई होवे से हर साल कई हजार संगवारी मन ल स्नायु के नुकसान होही अऊ शरीर म विकृति होत जाही। अईसन नई करे म अऊ बहु-दवाई लेवईया संगवारी मन ला शरीर के सूजन ल रोके बर मदद नई मिलय।

खुद आप मन के परिजन, परिवार अऊ जम्मों संगवारी मन ल आपके अईसन लिखे से सुरक्षा मिलही।

****

ये लेख हा भारत के एक चिकित्सा महाविद्यालय के जूना पढ़ाईया मन के बीच गोठ-बात के चलते आकार लीस हावय। एकर सुरुआती प्रारूप कई ठन अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन मन ला भेजे गे रिहीसे, जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), अंतरराष्ट्रीय कुष्ठ विरोधी समन्वय (ILEP), निप्पोन फाउंडेशन, नोवार्टिस टिकाऊ विकास संगठन (नोवार्टिस फाउंडेशन फॉर सस्टेनॅबल डेवेलपमेंट), कुष्ठ पत्र सूची (लेप्रसी मेलिंग लिस्ट)। एकर अलावा अंतरराष्ट्रीय कुष्ठ-रोग विशेषज्ञ अऊ देश के कोना कोना मा बगरे सामाजिक सोच वाले चिकित्सक समुदाय से भी सलाह-मशवरा करे गीस। लेख के अंतिम प्रारूप बर लेखक खुद पूरी तरह जिम्मेवार है।